Bihar Board Class 12th Hindi Book Solutions Chapter 13 गाँव का घर

प्रश्न 1.
कवि की स्मृति में 'घर का चौखट' इतना जीवित क्यों है?
उत्तर-
कवि की स्मृति में "घर का चौखट" जीवन की ताजगी से लवरेज है। उसे चौखट इतना जीवित इसलिए प्रतीत होता है कि इस चौखट की सीमा पर सदैव चहल–पहल रहती है। कवि अतीत की अपनी स्मृति के झरोखे से इस हलचल को स्पष्ट रूप से देखता है अर्थात् ऐसा अनुभव करता है जब उस चौखट पर बुजुर्गों को घर के अन्दर अपने आने की सूचना के लिए खाँसना पड़ता था तथा उनकी खड़ाऊँ की "खट–पट" की स्वर लहरी सुनाई पड़ती थी।

इसके अतिरिक्त बिना किसी का नाम पुकारे अन्दर आने की सूचना हेतु पुकारना पड़ता था। चौखट के बगल में गेरू से रंगी हुई दीवार थी। ग्वाल दादा (दूध देनेवाले) प्रतिदिन आकर दूध को देते थे। दूध की मात्रा का विवरण दूध से सने अपने अंगुल को उस दीवार पर छाप द्वारा करते थे, जिनकी गिनती महीने के अंत में दूध का हिसाब करने के लिए की जाती थी।

उपरोक्त वर्णित उन समस्त औपचारिकताओं के बीच "घर की चौखट"
सदैव जाग्रत रहता था, जीवन्तता का अहसास दिलाता था।

प्रश्न 2.
"पंच परमेश्वर" के खो जाने को लेकर कवि चिन्तित क्यों है?
उत्तर-
"पंच परमेश्वर" का अर्थ है–'पंच' परमेश्वर का रूप होता है। वस्तुतः पंच के पद पर विराजमान व्यक्ति अपने दायित्व–निर्वाह के प्रति पूर्ण सचेष्ट एवं सतर्क रहता है। वह निष्पक्ष न्याय करता है। उस पर सम्बन्धित व्यक्तियों की पूर्ण आस्था रहती है तथा उसका निर्णय "देव–वाक्य" होता है।

कवि यह देखकर खिन्न है कि आधुनिक पंचायती राज व्यवस्था की सार्थकता विलुप्त हो गई। एक प्रकार से अन्याय और अनैतिकता ने व्यवस्था को निष्क्रिय कर दिया है, पंगु बना दिया है। पंच परमेश्वर शब्द अपनी सार्थकता खो चुका है। कवि इसी कारण चिन्तित है।।

प्रश्न 3.
"कि आवाज भी नहीं आती यहाँ तक, न आवाज की रोशनी न रोशनी की आवाज" यह आवाज क्यों नहीं आती?
उत्तर-
कवि ज्ञानेन्द्रपति का इशारा रोशनी के तीव्र प्रकाश में आर्केस्ट्रा के बज रहे संगीत से है। रोशनी के चकाचौंध में बंद कमरे में आर्केस्ट्रा की स्वर–लहरी गूंज रही है, किन्तु कमरा बंद होने के कारण यह बाहर सुनी नहीं जा सकती। अतः कवि रोशनी तथा आर्केस्ट्रा के संगीत दोनों से वंचित है। आवाज की रोशनी का संभवतः अर्थ आवाज से मिलनेवाला आनन्द है उसी प्रकार रोशनी की आवाज का अर्थ प्रकाश से मिलने वाला सुख इसके अतिरिक्त एक विशेष अर्थ यह भी हो सकता है कि आधुनिक–समय की बिजली का आना तथा जाना अनिश्चित और अनियमित है।

कवि उसके बने रहने से अधिक “गई रहने वाली” मानते हैं। उसमें लालटे के समान स्निग्धता तथा सौम्यता की भी उन्हें अनुभूति नहीं होती। उसी प्रकार आर्केष्ट्रा में उन्हें उस नैसर्गिक आनन्द की प्रतीत नहीं होती जो लोकगीतों बिरहा–आल्हा, चैती तथा होली आदि गीतों से होती है। कवि संभवतः आर्केस्ट्रा को शोकगीत की संज्ञा देता है। इस प्रकार यह कवितांश द्विअर्थक प्रतीत होता है।

प्रश्न 4.
आवाज की रोशनी या रोशनी की आवाज का क्या अर्थ है?
उत्तर-
आवाज की रोशनी या रोशनी की आवाज कवि की काव्यगत जादूगरी का उदाहरण है, उनकी वर्णन शैली का उत्कृष्ट प्रणाम है। आवाज की रोशनी से संभवतः उनका अर्थ संगीत से है। संगीत में अभूतपूर्व शक्ति है। वह व्यक्ति के हृदय को अपने मधुर स्वर से आलोकित कर देता है। इस प्रकार वह प्रकाश के समान धवल है तथा उसे रोशन करती है।

रोशनी की आवाज से उनका तात्पर्य प्रकाश की शक्ति तथा स्थायित्व से है। प्रकाश में तीव्रता चाहे जितनी अधिक हो किन्तु उसमें स्थिरता नहीं हो, अनिश्चितता अधिक हो तो वह असुविधा एवं संकट का कारण बन जाती है। संभव है कवि का आशय यही रहा हो।

कविता की पूरी पंक्ति है, “कि आवाज भी नहीं आती यहाँ तक, न आवाज की रोशनी, न रोशनी की आवाज”। कवि के कथन की गहराइयों में जाने पर एक आनुमानित अर्थ यह भी है–दूर पर एक बंद कमरे में प्रकाश की चकाचौंध के बीच आर्केस्ट्रा का संगीत ऊँची आवाज में अपना रंग बिखेर रहा है किन्तु कमरा बंद होने के कारण अपने संकुचित परिवेश में सीमित श्रोताओं को ही आनंद बिखर रहा है। उसके बाहर रहकर कवि स्वयं को उसके रसास्वादन (अनुभूति) से वंचित पाता है।

प्रश्न 5.
कविता में किस शोकगीत की चर्चा है?
उत्तर-
कवि उन गीतों का याद कर रहा है जिसे सुनकर प्रत्येक श्रोता का हृदय एक अपूर्व आनंद प्राप्त था। ये लोकगीत–होली–चैती, विरहा–आल्हा आदि जो कभी जन–समुदाय के मनोरंजन तथा प्रेरणा के श्रोत थे, बीते दिनों की बात हो गए। अब उनकी छटा की बहार उजड़े दयार में तब्दील हो गई हो। उनका स्थान शोक गीतों ने ले लिया। ये शोकगीत कवि के अनुसार आधुनिक शैली के गीत, आर्केस्ट्रा की धुन आदि है जो कर्णकटु भी है तथा निरर्थक भी। उत्तेजना तथा अपसंस्कृति के वाहक मात्र हैं। उसमें नवस्फूर्ति एवं माधुर्य का सर्वथा अभाव है। अतः उसमें शोकगीत की अनुभूति होती है।

प्रश्न 6.
सर्कस का प्रकाश–बुलौआ किन कारणों से भरा होगा?.
उत्तर-
सर्कस में प्रकाश बुलौआ दूर–दराज के क्षेत्रों में रहनेवाले लोगों को अपनी ओर आकृष्ट करता था। उसकी तीव्र–प्रकाश तरंगों से लोगों को सर्कस के आने की सूचना प्राप्त हो जाया करती थी। यह प्रकाश–बुलौआ एक प्रकार से दर्शकों को सर्कस में आने का निमंत्रण होता था। अब सर्कस का प्रकाश–बुलौआ लुप्त हो गया है कहीं गुमनामी में खो गया है। ग्रामीणों की जेब खाली कराने की उसकी रणनीति भी उसके साथ ही विदा हो गई है। प्रकाश–बुलौआ का गायब होना भी रहस्यमय है। संभवतः सरकार को उसकी यह नीति पसंद नहीं आई तथा इसी कारण अपने

https://www.evidyarthi.in/

शासनादेश में प्रकाश–बुलौआ पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया। अब सर्कस प्रकाश–बुलौआ का सहारा नहीं ले सकता। कवि का कथन “सर्कस का प्रकाश–बुलौआ तो कब का मर चुका है।” इस परिपेक्ष्य में कहा गया लगता है।

प्रश्न 7.
गाँव के घर रीढ़ क्यों झुरझुराती है? इस झुरझुराहट के क्या कारण हैं?
उत्तर-
कवि ने गाँवों की वर्तमान स्थिति का वर्णन करने के क्रम में उपरोक्त बातें कही हैं। हमारे गाँवों की अतीत में गौरवशाली परंपरा रही है। सौहार्द्र, बन्धुत्व एवं करुणा की अमृतमयी धारा यहाँ प्रवाहित होती थी। दुर्भाग्य से आज वही गाँव जड़ता एवं निष्क्रियता के शिकार हो गए हैं। इनकी वर्तमान स्थिति अत्यन्त दयनीय हो गई है। अशिक्षा एवं अंधविश्वास के कारण परस्पर विवाद में उलझे हुए तथा स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं से त्रस्त हैं। शहर के अस्पताल तथा अदालतें इसकी साक्षी हैं। इसी संदर्भ में कवि विचलित होते हुए अपने विचार प्रकट करते हैं।

“लीलने वाले मुँह खोले शहर में बुलाते हैं बस
अदालतों और अस्पतालों के फैले–फैले भी रूंधते–गंधाते अमित्र परिवार”

कवि के कहने का आशय यह प्रतीत होता है कि शहर के अस्पतालों में गाँव के लोग रोगमुक्त होने के लिए इलाज कराने आते हैं। इसी प्रकार अदालतों में आपसी विवाद में उलझकर अपने मुकदमों के संबंध में आते हैं। ऐसा लगता है कि इन निरीह ग्रामीणों को निगल जाने के लिए नगरों के अस्पतालों तथा अदालतों का शत्रुवत परिसर मुँह खोल कर खड़ा है। इसका परिणाम ग्रामीण जनता की त्रासदी है। गाँव के लोगों की आर्थिक तथा सामाजिक स्थिति चरमरा गई है। अतः उनके घरों की दशा दयनीय हो गई है।

कवि ने संभवतः इसी संदर्भ में कहा है, “कि जिन बुलौओं से गाँव के घर
की रीढ़ झुरझुराती है” अर्थात् शहर के अस्पतालों तथा अदालतों द्वारा
वहाँ आने का न्योता देने से उन गाँवों की रीढ़ झुरझुराती है। कवि की
अपने अनुभव के आधार पर ऐसी मान्यता है कि गाँववालों का अदालतों तथा अस्पतालों का अपनी समस्या के समाधान में चक्कर लगाना दुःखद है। इसके कारण गाँव के घर की रीढ़ झुरझुरा गई है। गाँव में रहने वालों की स्थिति जीर्ण–शीर्ण हो गई है।

प्रश्न 8.
मर्म स्पष्ट करें–”कि जैसे गिर गया हो गजदंतों को गंवाकर कोई हाथी”।
उत्तर-
ज्ञानेन्द्रपति लिखित कविता “गाँव का घर” में “गजदंतों को गँवाकर कोई हाथी” की तुलना सर्कस के प्रकाश–बुलौआ से की गई है। सर्कस में प्रकाश–बुलौआ (सर्चलाइट) का प्रयोग शहर में सर्कस कम्पनी के आने की सूचना के उद्देश्य से किया जाता है। इसके साथ ही इसके द्वारा दूर–दूर तक जन समुदाय को आकृष्ट करना भी एक लक्ष्य होता है ताकि दर्शकों की संख्या बढ़ सके। एक शासनादेश द्वारा प्रकाश–बुलौआ पर रोक लगा दी गई है तथा अनेक वर्षों से इसका प्रसारण. बंद है। यह लुप्त हो गया है। इसी संदर्भ में कवि दृष्टान्त के रूप में उपरोक्त पंक्ति के द्वारा उसकी तुलना अपने दोनों दाँत खोकर भूमि पर गिरे हुए हाथी से कर रहे हैं। जिस प्रकार दोनों दाँत खोकर हाथी पीड़ा से भूमि पर गिर पड़ा है उसी प्रकार प्रकाश बुलौआ भी निस्तेज हो गया है।

प्रश्न 9.
कविता में कवि की कई स्मृतियाँ दर्ज हैं। स्मृतियों का हमारे लिए क्या महत्त्व होता है, इस विषय पर अपने विचार विस्तार से लिखें।

उत्तर-
"गाँव का घर" शीर्षक कविता में कवि के जीवन की कई स्मृतियाँ दर्ज हैं। अपनी कविता के माध्यम से कवि उन स्मृतियों में खोजा है। बचपन में गाँव का वह घर, घर की परंपरा, ग्रामीण जीवन–शैली तथा उसके विविध रंग–इन सब तथ्यों को युक्तियुक्त ढंग से इस कविता में दर्शाया गया है।

वस्तुतः स्मृतियों का हमारे जीवन में महत्वपूर्ण स्थान है। स्मृतियों का हमारे जीवन में महत्वपूर्ण स्थान है। स्मृतियों के द्वारा हम आत्म–निरीक्षण करते हैं तथा वे अन्य व्यक्तियों के लिए भी प्रेरणा का स्रोत होती हैं। इसके द्वारा हमें अपने जीवन की कतिपय विसंगतियों से स्वयं को मुक्त करने का अवसर मिलता है। बाल्यावस्था की अनेक भूलें हमारे भविष्य को बुरी तरह प्रभावित करती है। अपने जीवन के ऊषाकाल में उपजी कुप्रवृत्तियाँ हमारी दिशा तथा दशा दोनों. ही बुरी तरह प्रभावित करती हैं।

प्रश्न 10.
चौखट, भीत, सर्कस, घर, गाँव और साथ ही बचपन के लिए कवि की
चिन्ता को आप कितना सही मानते हैं? अपने विचार लिखें।
उत्तर-
कवि ने अपनी कविता "गाँव का घर" शीर्षक कविता में चौखट, भीत, घर, गाँव आदि शब्दों का प्रयोग किया है। इन शब्दों द्वारा कवि ने ग्रामीण जीवन की विभिन्न समस्याओं को रेखांकित किया है। उन्होंने बचपन के अपने अनुभवों को भी सजीव ढंग से इस कविता में सजाया है।

कवि ने ग्रामीण जीवन का सहज एवं स्वाभाविक विवरण उपरोक्त शब्दों द्वारा अपनी कविता में सही ढंग से किया है। घर का चौखट गाँव की रूढ़िवादी परंपरा का प्रतीक है जहाँ से घर के अन्दर प्रवेश करने के लिए बुजुर्गों को खाँसकर, आवाज लगाकर जाना पड़ता था। गेरू लिपी भीत (दीवार) अभाव एवं विपन्नता की ओर संकेत करती है। सर्कस अपने इर्द–गिर्द बिखरे, आकर्षण को दर्शाता है। दस कोस की दूरी से ग्रामीणों को आमंत्रित करते हुए अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए, अर्थात् पैसे कमाने के लिए प्रकाश–बुलौआ का सहारा लेता है तथा ग्रामीणों की जेब खाली कराता है।

घर गाँव की जीवन–शैली का चित्र है जो सदगी और अभाव का प्रतिरूप है। गाँव हमारी बदहाली तथा रूढ़िवादी मानसिकता को रेखांकित करता है। बचपन जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा है, जीवन की आधारशिला है। उसे निरर्थक खोकर अर्थात् इसका दुरुपयोग करके मनुष्य अपना सर्वस्व खो देता है। कवि का इशारा उसी ओर है, उसे निरूद्देश्य नष्ट करने के लिए नहीं सार्थक बनाने के लिए है।

अतः कवि की चिन्ता इन सबके लिए सर्वदा उपर्युक्त तथा सोद्देश्य है। मैं उनके विचारों तथा चिन्ता को पूर्णतः सही मानता हूँ।

प्रश्न 11.
जिन चीजों का विलोप हो चुका है, जिनके लिए शोक है, उनकी एक
सूची बनाएँ।
उत्तर-
वर्तमान समय में अनेकों प्राचीन परंपराओं तथा वस्तुओं का लोप हो गया है। कुछ चीजों के लिए हम शोक मनाते हैं। जिन चीजों का लोप हो गया है उनमें निम्नांकित वस्तुएँ मुख्य हैं–

- गाँव का पुराना घर,
- अंत:पुर की चौखट,

https://www.evidyarthi.in/

- बुजुर्गों की खड़ाऊँ,
- बचपन में कवि के. भाल पर दुग्ध तिलक,
- गेरू से रंगी दीवार पर दूध से सने अंगूठे की छाप,
- पंच परमेश्वर,
- होली–चैती, विरहा–आल्हा आदि लोकगीत,
- सरकस का प्रयोग–बुलौआ इत्यादि।

जिन वस्तु के लिए शोक है, उनमें निम्नांकित प्रमुख हैं–

- कवि का बचपन,
- पंच परमेश्वर के स्थान पर भ्रष्ट पंचायती राज व्यवस्था,
- बिजली की अनियमित आपूर्ति,
- होली–चैती बिरहा–आल्हा आदि लोकगीतों की मरणासन्न स्थिति,
- अदालतों तथा अस्पतालों द्वारा निरीह ग्रामवासियों का शोषण तथा धोखाधड़ी।

भाषा की बात

प्रश्न 1.
"गाँव के घर की रीढ़ झुरझुराती है" झुरझाराती के लिए आप कोई अन्य शब्द देना चाहेंगे यह सबसे सटीक किया है, यदि हाँ तो कैसे?
उत्तर-
प्रस्तुत पंक्तियाँ ज्ञानेन्द्रपति द्वारा लिखित 'गाँव का घर' शीर्षक काव्य पाठ से ली गयी है। इस कविता में गाँव के घर की रीढ़ झरझराती एक मुहावरेदार प्रयोग है। इस प्रयोग में गाँव के घर की जर्जरावस्था की ओर कवि ने हमारा ध्यान आकृष्ट किया है। कवि का कहना है कि गाँवों में बसे घरों की स्थिति ठीक उसी तरह लगती है जैसे नूना खाई दीवारें केवल रीढ़ के रूप में दिखायी पड़ती है जो हमारे अतीत की याद दिलाती है। गाँव की झुरझुराती दीवारों का अस्तित्व अब कहाँ रहा? केवल बची–खुची ढहती दीवारें अपने अतीत की याद दिला रही हैं।

कवि बदलते गाँव, उसकी संस्कृति और लोकजीवन में, अत्याधुनिकता की पैठ से आकुल–व्याकुल है। यह अपने बचपन, गाँव–घर गाँव के नाते–रिश्ते आदि की बड़ी ही सटीक व्याख्या की है। भारतीय गाँवों के परिदृश्य आज बिल्कुल बदल गए हैं। वे शहरीकरण की चपेट में दिनोंदिन आते जा रहे हैं। इस प्रकार गाँव के घर रीढ़ के लिए झुरझुराना शब्द का प्रयोग कर प्रस्तुतीकरण में प्रभावोत्पादकता ला दिया है। कवि गाँव के संस्कारों और रीति–रिवाजों की सुरक्षा के लिए विवश है किन्तु कर ही क्या सकते हैं।

'झुरझुराना' क्रिया गाँव के घर की सही चित्रण कर पाने में समर्थ रही है। घर के बाहर और भीतर की बदलती तस्वीर 21वीं सदी के दौर में बदलते जीवन मूल्यों से आवश्यक प्रभावित हो रही है। 'झुरझुराना' क्रिया की जगह दूसरी क्रिया का प्रयोग अब निरर्थक–सा लगता है। कवि का काव्य–कौशल प्रस्तुत कविता में स्पष्ट दृष्टिगत है। सटीक शब्दों के प्रयोग द्वारा ग्रामीण परिवेश की सच्चाइयों को उकेरने में कवि को सफलता मिली है। कवि ने जीवन के बदलते मूल्यों और रिश्तों की सच्चाइयों को बेबाकी से चित्रित किया है। गाँव हमारी संस्कृति की रीढ़ है।

अगर भारत में गाँवों का अस्तित्व नहीं रहेगा तो भारत का भी अस्तित्व खतरे में पड़ जाएगा। गाँव हमारी सभ्यता और इतिहास का साक्षी है। आज सबको मिलकर गाँव के अस्तित्व के लिए चिन्तन करना होगा। गाँव का घर हमारा लोक जीवन, लोक संस्कृति का प्रतीक है। वहीं से यानि गाँव से ही हम संस्कृति संकट को अतुंग शिखर तक

ले जा सकते हैं और ग्रामीण परिवेश, संस्कृति की रक्षा कर सकती है।।

गाँव रहेगा तो चौखट–संस्कृति बचेगी। गाँव रहेगा तो बूढ़–बुजुर्ग का अनुशासन खबरदारी हमें जगाए रखेगी। गोबर द्वारा घर की लिपाई और गेरू द्वारा रंगाई हमारी सभ्यता की पहचान है। लेकिन अब ये बातें स्वप्न की बातें रह गयी हैं इसलिए कवि चिन्तित है। उसे पंच–परमेश्वर की न्यायप्रियता अब नहीं दिखाई पड़ती। अब तो सब जगह नए जमाने की धमक ने गाँव को अपने आगोश में ले लिया है। बेटे की शादी में टी. वी., दहेज की मांग ने हमारी जीवन शैली में बदलाव ला दिया है। इस प्रकार लालटेन युग खत्म हो गया है।

बिजली गाँव–गाँव पहुंच चुकी है। एक तरफ हम विकास की ओर बढ़
रहे हैं किन्तु मन हमारा दूषित हो रहा है आपसी दुश्मनी में मित्रता को
समाप्त कर दिया है। इस प्रकार कवि ने 'गाँव को घर की झुरझुराती
रीढ़' द्वारा ग्राम–संस्कृति का यथार्थ चित्रण करते हुए परिदृश्य की ओर ध्यान आकृष्ट किया। अब गाँव का अस्तित्व संकट के चक्रव्यूह में घिरा है। कवि चिन्तित है। व्यथित है।

प्रश्न 2.
बिजली बत्ती आ गई कब की, बनी रहने से अधिक गई रहने वाली, कवि के भाषित कौशल का यह एक उपयुक्त उदाहरण है। बिजली नहीं रहती इसके लिए' नहीं रहने वाली प्रयोग होता उतनी व्यंजकता नहीं आती जितनी गई रहने वाली से।

इस दृष्टि से विचार करते हुए कविता से ऐसी पंक्तियों को चुनें।
उत्तर-

- जिसके भीतर आने से पहले खाँसकर आना पड़ता था।
- खड़ाऊँ खटकनी पड़ती थी,
- एक अदृश्य पर्दे के पार से पुकारना पड़ता था,
- जेठ–लिपि भीत पर दूध–डूबे अंगूठे के छाप
- महीने के अंत में गिने जाते एक–एक कर
- चकाचौंध की रोशनी ने मदमस्त आर्केस्ट्रा
- न आवाज की रोशनी न रोशनी की आवाज
- लोकगीतों की जन्मभूमि में
- एक शोकगीत अनगाया, अनसुना
- आकाश और अंधेरे को काटते
- गंजदतों को गंवाकर कोई हाथी
- सर्कस का बुलौआ–प्रकाश
- उन दाँतों की जरा–सी धवल–धूल पर
- लीलने वाले मुँह खोले शहर में बुलाते हैं
- अदालतों और अस्पतालों के फैले–फैले रुंधते–गधाते अमित्र परिसर
- जिन बुलौओं से गाँव के घर की रीढ़ झुरझुराती है।

प्रश्न 3.
इन शब्दों के लिए कविता में प्रयुक्त विशेषणों से अलग विशेषण दें।
रोशनी, आर्केस्ट्रा, आवाज, जन्मभूमि, शोकगीत, आकाश, सर्कस,

https://www.evidyarthi.in/

हाथी, धूल, भीत।
उत्तर-

- रोशनी – तीव्र रोशनी
- आर्केस्ट्रा – अच्छा आर्केस्ट्रा
- शोकगीत – अनसूना शोकगीत
- आकाश – नीला आकाश
- सर्कस – नया सर्कस
- हाथी – बूढ़ा हाथी
- धूल – उड़ती धूल
- भीत – पुरानी भीत
- आवाज – धीमी आवाज, मधुर आवाज
- जन्मभूमि – मेरी जन्मभूमि, महान जन्मभूमि

प्रश्न 4.
कविता से देशज शब्दों को चुनकर लिखें।
उत्तर-
काव्य पाठ से देशज शब्द इस प्रकार हैं–चौखट, सहजन, लिपी–भीत, उठौना, बिटौआ, टिकुली, भिड़काए, बुलौआ, लीलनेवाला आदि।

प्रश्न 5.
धवल–धूल से क्या आशय है?
उत्तर-
धवल–धूल का आशय है–हाथी के धवल दाँत जो काटे गए हैं, उस दाँत से जो बुरादा धूल–कण की तरह गिरे हुए हैं उसी से तुलना करते हुए कवि कहता है कि ठीक उसी प्रकार नूना लगे हुए गाँव के घरों की दीवारें हाथी का महत्व नहीं है ठीक उसी प्रकार हमारे पुराने गाँव वहाँ की खूबियाँ और खुशियाँ अब नहीं रही। दस कोस दूर से जो सर्कस वाला अपनी उपस्थिति का आभास अपनी टॉर्च की रोशनी से करवाता है; वे दिन भी लद गए।

यानि सब कुछ बदला–बदला सा है। गाँव–घर सबकुछ अब स्मृति की
बातें रह गयौं। कवि अपनी कविता में अपने अतीत को याद कर रहा है
और गाँव में बीते क्षण वहाँ की कहानियाँ, लोगों के आपसी संबंध,
परिवार की गरिमा और अनुशासन अब कुछ नहीं रहा। गाँव का पुराना स्वरूप ही बदल गया है। गाँव को शहर ने अपने कौर में लील लिया है। गाँव के लोकगीत चौपालों की बैठकें, कथाएँ, अब केवल स्मृति–धरोहर रह गयी हैं।

विरहा, आल्हा, चैता होली आदि के समधुर और हृदयस्पर्शी गीत नहीं सुनायी पड़ते। इन ग्राम गीतों की जगह शोक गीत अपना साम्राज्य बढ़ा लिया है यानि हर जगह द्वेष, ईर्ष्या, मार–काट मुकदमेबाजी से जन–जीवन त्रस्त है। रात उजाले से अधिक अंधेरा उगलती द्वार गाँव के भयानक दृश्य को चित्रित किया है। जंगल भी अब नहीं रहे। हर जगह जंगल काटकर शहर बसाए जा रहे हैं।

गाँव की निशानी भी अब मिट गयी। खेत–खलिहान के अस्तित्व पर खतरा उपस्थित हो गया है। अदालतों और अस्पतालों में दुश्मनी और चीत्कारें सुनाई पड़ती हैं। क्या यही था आजादी पूर्व हमारा गाँव और हमारा घर। धवल–धूल के माध्यम से कवि धुंधली स्मृतियाँ ही अब शेष रह गयीं हैं कि चारों ओर ध्यान आकृष्ट किया है। सब जगह कोलाहल, वैमनस्य और बदलते आपसी रिश्तों की बड़ी साफगोई से कवि ने चित्रण किया है।

अब गाँव की सारी पुरानी विशेषताएँ अपनत्व, भाईचारा, आपसी मेल कथा के रूप में याद रहेंगी। वे दिन अब लौटने वाले नहीं हैं। कवि का मन अपने गाँव यानी भारत के गाँव की बदली तस्वीर को देखकर बेचैन है। विकल हैं। ढहती घर की दीवारें उसके मन में उद्वेलित कर देती है।

https://www.evidyarthi.in/